# आचार्य शंकर सांस्कृतिक एकता न्यास

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग

जनजातीय संग्रहालय, श्यामला हिल्स, भोपाल (मध्यप्रदेश) 462003


S. No./1851/ Trust /F- 83/2 /2022 Bhopal, Date 12 / 10 /2022

## Justification

भारतीय संस्कृति की अदम्य जिजीविषा में एक ऐसी स्वभावगत भास्वरता है कि वह कालप्रवाह से स्वयं पर आयी मलिनता व तमिस्त्रा का निवारण सतत् करती रहती है। एतदर्थ यह महान विभूतियों को समय-समय पर प्रसवित करती रहती है। आचार्य श्रीशंकर ऐसी विभूतियों में अद्वितीय हैं। उनमें भारतीय वैदिक संस्कृति का शुद्ध, श्रेष्ठतम एवं सर्वांगीण स्वरूप व्यक्त हुआ। तत्कालीन भारत धार्मिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से आपदाग्रस्त था। सनातन-वैदिक धर्म ओजहीन होकर नाना प्रकार के मत-मतोंतरों में विघटित हो चुका था। जनमानस में वैदिक कर्म-काण्डों के प्रति हेय दृष्टि तथा जीवन के प्रति निराशा की वृत्ति उत्पन्न हो गई थी।

भारत की आध्यात्मिक शक्ति के अविरल प्रवाह को सशक्त रूप से प्रवाहमान बनाए रखने में आदि शंकराचार्य जी के कार्य एवं दर्शन की महत्वपूर्ण भूमिका है। अद्वैत दर्शन सम्पूर्ण विश्व को धर्म, पंथ, रंग, जाति, लिंग, प्रजाति, भाषा आदि की विविधताओं से परे एक सूत्र में बांधने का दर्शन है। आदि गुरू शंकराचार्य ने भारत को सांस्कृतिक एकता में निबद्ध करने का महान कार्य किया।

अत: आचार्य शंकर के अद्वैत वेदान्त दर्शन को जन-जन तक पहुँचाने के लिये आचार्य शंकर की शिक्षा-दीक्षा स्थली ओंकारेश्वर में आचार्य शंकर अंतरराष्ट्रीय अद्वैत वेदान्त संस्थान की स्थापना की जाना है। इस संस्थान में विश्वभर के स्कॉलर्स, संस्थान, आम नागरिक आदि अध्ययन (शोध), अध्यापन एवं प्रशिक्षण आदि का आदान-प्रदान कर सकेंगे। इस संस्थान के अद्वैत प्रशिक्षण केन्द्र का विस्तार करने पर लगभग 200 विद्यार्थी इसमें अध्ययन करेंगे तथा देश एवं सुदूर देशों के विद्यार्थियों, शोधार्थियों, विद्वानों तथा समाज के विभिन्न वर्गों को प्रशिक्षण दिया जायेगा जिससे सभी को आज के आधुनिक परिवेश में भी भारतीय संस्कृति का बोध होगा। इस अद्वैत प्रशिक्षण केन्द्र के प्रारम्भ होने पर लगभग 150 व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध हो सकेगा।

12/10/2022

(डॉ. शैलेन्द्र मिश्र:)
सहायक संचालक, संस्कृति
सह प्रभारी अधिकारी
आचार्य शंकर सांस्कृतिक एकता न्यास
मो.न. 94250 24594


|| सर्वं खल्विदं ब्रह्म ||